International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
July - August- 2020, Volume-7, Issue-4 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

धर्मवीर के उपन्यासों का शिल्प विधान

गुड्डी बाई मीना
सहायक आचार्य
राजस्थान विश्वविद्यालय

सार

धर्मवीर भारती काव्यानुभव एवं अभिव्यक्ति के स्तर पर नयी कविता के साधक सर्जक कलाकार थे। भारती का अनुभव संसार जितना विस्तृत एवं व्यापक है, उतना ही खुलापन और सहजता उनकी काव्य-भाषा में है। भारती की काव्यभाषा और उसमें प्रयुक्त शब्द अत्यन्त अर्थवान होने के काण अनुभूति के सम्पूर्ण क्रिया- व्यापार को जीवन्त रूप से प्रस्तुत करते हैं। धर्मवीर भारती की काव्यभाषा की सबसे बड़ी शक्ति है- उसके विशेषण शब्द। इन विशेषणों का प्रयोग कवि ने बहुत ही स्वाभाविक और अनुभूति के अनुकूल कलात्मक ढंग से किया है। जो काव्यभाषा में अद्‌भुत आकर्षण उत्पन्न करते है तथा उसकी सम्प्रेषण शक्ति का विकास करते हैं। भारती की कविता में औचित्यपूर्ण ढंग से नियोजित विशेषण शब्दों ने काव्य भाषा की संवेदनात्मक क्षमता में चार चाँद लगा दिये हैं। वास्तव में विशेषण भारती की काव्य भाषा के आकर्षण का प्रमुख कारण है । प्रस्तुत शोध-पत्र में धर्मवीर भारती की काव्य - भाषा में प्रयुक्त विशेषणों का मौलिक ढंग से विश्लेषण किया जावेगा।

मुख्य शब्द: *काव्यभाषा, कलाकार, हिन्दी साहित्य*

परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक, कवि, नाटककार, उपन्यासकार और समाजवादी विचारक, डॉ. धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर, सन् 1926 ई. को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (या इलाहाबाद) के अतरसुइया मोहल्ले में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री चिरंजीलाल तथा माता का नाम चंदा देवी था। इनके बाल्यकाल में ही इनकी माता का निधन हो गया था जिस कारण इनके पिता पर गहरा प्रभाव पड़ा। और कुछ समय बाद ही इनके पिता की असमयक मृत्यु हो गई। जिस कारण इन्हें बहुत ही आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा, परिवार की आर्थिक स्थिति पूर्ण रूप से आर्य समाज में ढली हुई थी। जिसके कारण भारती जी पर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ा। इनकी एक बहन भी थी जिनका नाम डॉक्टर वीरबाला था।

घर और स्कूल से प्राप्त आर्यसमाजी संस्कार, इलाहाबाद और विश्वविद्यालय का साहित्यिक वातावरण, देश भर में होने वाली राजनैतिक हलचलें बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु और उससे उत्पन्न आर्थिक संकट इन सबने उन्हें अतिसंवेदनशील, तर्कशील बना दिया। उन्हें जीवन में दो ही शौक थे ,भारती के साहित्य में उनके विशद अध्ययन और यात्रा-अनुभवों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है:

"उन्हें आर्यसमाज की चिंतन और तर्कशैली भी प्रभावित करती है और रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत। प्रसाद और शरत्चन्द्र का साहित्य उन्हें विशेष प्रिय था। आर्थिक विकास के लिए मार्क्स के सिद्धांत उनके आदर्श थे परंतु मार्क्सवादियों की अधीरता और मताग्रहता उन्हें अप्रिय थे। 'सिद्ध साहित्य' उनके शोध' का विषय था, उनके सटजिया सिद्धांत से वे विशेष रूप से प्रभावित थे। पश्चिमी साहित्यकारों में शीले और आस्करवाइल्ड उन्हें विशेष प्रिय थे। भारती को फूलों का बेहद शौक था। उनके साहित्य में भी फूलों से संबंधित बिंब प्रचुरमात्रा में मिलते हैं।

रचनाएँ

धर्मवीर भारती जी के लगभग 20 ग्रन्थ प्रकाशित हुए, जिनमें 'कनुप्रिया', 'ठण्डा लोहा', 'अन्धा युग' और 'सात गीत वर्ष' (काव्य); 'गुनाहों का देवता', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' (उपन्यास); 'नदी प्यासी थी (नाटक); 'कहनी-अनकहनी', 'ठेले पर हिमालय, 'पश्यन्ती' (निबन्ध-संग्रह); 'चाँद और टूटे हुए लोग (कहानी-संग्रह) तथा 'देशान्तर' (अनुवाद) आदि उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

धर्मवीर भारती की कहानी संग्रहः मुर्दों का गाँव 1946, स्वर्ग और पृथ्वी 1949, चाँद और टूटे हुए लोग 1955, बंदगी का आखिरी मकान 1969, साँस की कलम से, समस्त कहानियाँ एक साथ ।

धर्मवीर भारती के काव्यः ठंडा लोहा(1952), सात गीत वर्ष (1959), कनुप्रिया (1959) सपना अभी भी(1993), आद्यन्त (1999), देशांतर (1960)

धर्मवीर भारती के उपन्यास : गुनाहों का देवता 1949, सूरज का सातवां घोड़ा 1952, ग्यारह सपनों का देश, प्रारंभ व समापन ।

धर्मवीर भारती के निबंध : ठेले पर हिमालय (1958ई०), पश्यन्ती (1969 ई०),कहनी-अनकहनी (1970 ई०),कुछ चेहरे कुछ चिन्तन (1995ई०), शब्दिता (1977ई०), मानव मूल्य और साहित्य (1960ई०)।

धर्मवीर भारती के एकांकी व नाटकः नदी प्यासी थी, नीली झील, आवाज़ का नीलाम आदि।

धर्मवीर भारती के पद्य नाटकः अंधा युग 1954

धर्मवीर भारती की आलोचनाः प्रगतिवाद : एक समीक्षा, मानव मूल्य और साहित्य

नए शिल्प का उपन्यास

इसके अतिरिक्त विश्व की कुछ प्रसिद्ध भाषाओं की कविताओं का हिन्दी अनुवाद भी 'देशान्तर' नाम से प्रकाशित हुआ है।

धर्मवीर भारती से पूर्व हिन्दी उपन्यास मूलतः दो दृष्टियों से रचे गए पहला दृष्टिकोण सामाजिक है और दूसरा वैयक्तिक, प्रेमचंद, अश्क, यशपाल और नागार्जुन के उपन्यास सामाजिक दृष्टिकोण से प्रभावित हैं, और जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी तथा अज्ञेय व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से प्रभावित प्रथम वर्ग पर मार्क्सवादी चिंतन का प्रभाव है तो दूसरे पर फ्रायड और व्यक्तिवादी विचारधारा का आधुनिकता का बोध दोनों दृष्टिकोणों में है। आधुनिक उपन्यासों के मूल में उपन्यासकार की जीवन-दृष्टि ही महत्वपूर्ण है। आधुनिक उपन्यासों का नयापन न तो विषय- वस्तु का नयापन है, न विधान का, न कथानक का; वह मूलतः जीवन के प्रति दृष्टिकोण का नयापन है। इस बदली हुई दृष्टि के कारण ही आज का उपन्यासकार समाज के बीच मानवीय संबंधों की तलाश करता है। उपन्यास जीवन की गाथा है, भाष्य है, उपासना है। स्वयंभारती ने 'मानव मूल्य और साहित्य' में कहा है- "कविता और नाटक दोनों की अपेक्षा मानव जीवन के चित्रण के लिए उपन्यास का क्षेत्र कहीं अधिक विस्तृत है। गीति काव्यों के पूँजीभूत भाव सत्य, दुखांत नाटकों के चिरंतन संघर्ष और करुणा, गीति काव्यों की गति और प्रवाहमानता, मुक्तकों का उक्ति-वैचित्र्य और नीति-सत्य, इन सभी पुराने साहित्य रूपों की शिल्पगत और वस्तुगत विशेषताओं को उपन्यास ने अपने व्यापक प्रसार में ग्रहण किया था।" यही कारण है कि भारती ने 'गुनाहों का देवता' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' दो महान कृत्तियां हिन्दी उपन्यास साहित्य को प्रदान कीं। 'गुनाहों का देवता' में भावना और वासना में उलझे व्यक्ति की प्रेम कथा के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज की रूविग्रस्तता और सामाजिक विषमताओं का निरूपण किया गया है, जबकि दूसरे उपन्यास में निम्न मध्य वर्ग के खोखलेपन को बेनकाब करते हुए सूरज के सातवें घोड़े का आह्वान किया गया है। अपने नवीन शिल्प-विधान के कारण यह उपन्यास अत्यधिक

लोकप्रिय एवं चर्चित रहा। इससे पूर्व कि इस रचना पर विस्तृत चर्चा की जाए प्रथम रचनाकार का पूर्ण परिचय प्राप्त करना उचित होगा।

डॉ. धर्मवीर भारती द्वारा लिखित अंधायुग कथ्य और शिल्प के स्तर पर सम्यक निर्वाह के कारण युद्धोत्तर विभीषिका का शिलालेख बन गया हैं। 'अंधायुग' यह भारती जी का बहुचर्चित सफल गीतिनाट्य हैं। 'अंधायुग' नाटक का कथ्य और शिल्प इस विषय के संदर्भ में अध्ययन के पश्चात कुछ निष्कर्ष विवेच्य अध्यायों से निकलते हैं। द्वापर युग का वह महासागर आज भी संपूर्ण विश्व में किसी न किसी रूप में प्रवर्तमान हैं। आधुनिक मानव की इसी पीड़ा को निर्मूल करने के लिए रक्तपात को समाप्त करने का मार्ग भारती जी ने 'अंधायुग' द्वारा खोजा हैं।

इलाहाबाद के अत्तरसुइया जैसे पुराने मुहल्ले में जन्मे डॉ. धर्मवीर भारती ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा के द्वारा आधुनिक हिंदी साहित्य में अपना एक निश्चित स्थान प्राप्त कर लिया हैं। भारती जी के कवि कहानीकार, नाटककार, निबंधकार, समीक्षक, पत्रकार, अनुवादक, उपन्यासकार, आदि रूप दिखाई देते हैं। उनकी प्रतिभा बहुआयामी हैं। धर्मवीर भारती जी के व्यक्तित्व पर छायावादी भावधारा का दूर तक प्रभाव पड़ा हैं। उनकी कलात्मक चेतना युगीन परिवेश के संदर्भों में ढली हैं। परंपराओं में नवीनता प्रयोगशीलता, आधुनिकता का समन्वय मिलता हैं।

अभय कृष्ण चौधरी की छत्रछाया में भारती ने प्रयाग विश्वविद्यालय से सन 1947 में हिन्दी में एम. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसी वर्ष उन्हें 'चिन्तामणिघोष' स्वर्ण पदक का पारितोषिक भी प्राप्त हुआ। तत्पश्चात डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में 'सिद्ध साहित्य' विषय पर पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। 1948 से 'संगम' में दो वर्ष तक सहकारी संपादक और तदुपरांत एक वर्ष तक 'हिन्दुस्तानी एकेडमी में उपसचिव का कार्य किया। सन 1960 तक प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्यापन करने के बाद 'धर्मयुग' के संपादक बनाकर बंबई चले गए। इससे पूर्व सन 1955 के आसपास भारती का विवाह पंजाबी शरणार्थी लड़की के साथ हुआ, किन्तु वह असफल रहा। इस असफलता का कारण था, वे सामाजिक मर्यादाएं जिनके कारण उनकी प्रेयसी पत्नी नहीं बन सकीं। जर्जरित रूढ़ियों के कारण मनचाहा साथी न प्राप्त कर पाने के कारण उनके भावुक हृदय पर आघात लगा था, इसी आघात की प्रतिछाया हमें 'गुनाहों का देवता' में चंदर के रूप में दिखाई पड़ती है। अनेक कविताओं में भी लेखक के इस अनकहे दर्द की अभिव्यक्ति हुई है। इसीलिए वह कहते हैं:-

"प्रीती ही सब कुछ नहीं हैं, लोक की मरजाद है सबसे बड़ी"

परन्तु बड़ी ही कुशलता से 'गुनाहों के देवता' में इस अनिवार्य सत्य को भी समझा देते हैं कि व्यक्तित्व के विकास में भावना और वासना का समन्वय आवश्यक है।

भारती जी की सर्वाधिक सफल कृति 'अंधायुग' कही जा सकती हैं, जिसने हिंदी साहित्य को गीतिनाट्य का एक आदर्श दिया। 'अंधायुग' में भारती जी ने युद्ध की विभीषिका का चित्र किया हैं। इसमें उन्होंने अंधों के माध्यम से ज्योति की कथा कही हैं।

'दूसरा सप्तक' काव्य संग्रह में डॉ. भारती अपने समकालीन कवियों से सर्वाधिक रोमंटिक रहें। आस्था-अनास्था का संघर्ष आस्था के प्रति झुकाव, रूमानियत का आकर्षण, सजीवता का चित्रण, प्रयोग की क्षमता जैसी प्रवृत्तियाँ इस काव्य संग्रह की कविताओं द्वारा प्राप्त होती हैं। 'सात वर्ष गीत' के माध्यम से प्रयोगात्मकता की सार्थकता सिद्ध होती हैं। इस काव्य-संग्रह में चित्रित कविताओं में आधुनिक परिस्थितियों का चित्रण भी हुआ हैं। 'ठंडा लोहा' काव्य संग्रह में भारती जी ने जगत् की करुणता, प्रेम, प्रकृति का चित्रण किया हैं। भावपक्ष की तरह शिल्प पक्ष की दृष्टि से भी ठंडा लोहा एक सफल कृति हैं।

उपन्यास कला के क्षेत्र में भारती जी सफल रहे हैं लोकप्रियता की दृष्टि से गुनाहों का देवता' का महत्व अक्षुण्ण हैं, तो प्रयोग की दृष्टि से सूरज का सातवाँ घोडा का महत्व है। कहानीकार के रूप में 'बंद गली का आखिरी मकान' संग्रह की कहानियाँ भारती की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगानेवाली हैं। 'चाँद और टूटे हुए लोग में रोमान

भावुकता हैं निबंधकार के रूप में 'ठेलेपर हिमालय' पश्यंती, कहनी अनकहनी प्रसिद्ध हैं। रिपोतार्ज हो या पत्रकारिता उनकी लेखनी लेखकीय प्रतिभा ने साहित्य की प्रायः सभी आधुनिक विधाओं को संपन्न किया हैं। उनकी कृतियों में चिंतन दृष्टि देखने को मिलती हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य को नई दिशा देने का कार्य किया। वे आधुनिक साहित्य के प्रबुद्ध कलाकार रहे हैं। उनके साहित्य की निर्मिति पूर्णतः अपनी अनुभूति पर हुई हैं। वे आधुनिक साहित्य के ज्ञाता थे।

'अंधायुग' वस्तुरूप में एक सफल आदर्श गीतिनाट्य हैं गीतिनाट्य में कथावस्तु के अंतर्गत भावात्मकता भावों की कोमलता, संघर्ष की प्रधानता प्रकृति विधान की सुंदरता आदि विशेषताएँ आती हैं। 'अंधायुग' गीतिनाट्य में मुक्त तथा अतुकांत छंद का प्रयोग कथागायन में प्रयोगधर्मिता, प्रसंगानुरूप लयबद्धता, रंग निर्देशों की नाटकीयता, अंतराल योजना दृश्य-श्रव्य लोक नाट्य का समन्वय आदि विशेषताएँ सामने आती हैं। 'अंधायुग' में महाभारत के अठारहवें दिन की संध्या से लेकर प्रभास तीर्थ में कृष्ण की मृत्यु तक घटनाओं का वर्णन हैं। वस्तुपक्ष की समीक्षा से 'अंधायुग' का आधार भले ही पौराणिक हो किंतु उसमें आधुनिक युग की संवेदना, समस्या, भावबोध, आधुनिक बोध विद्यमान हैं। युद्ध से उत्पन्न मूल्यहीनता, अमानवीयता, विकृत- कुंठा वैयक्तिक और सामूहिक विघटन का सजीव चित्रण किया दिखाई देता है। पौराणिक कथा के आश्रय में नवचेतना एवं नवजीवन दृष्टि द्वारा मानव सभ्यता के नव्य दृष्टि के बोध को आश्रय बनाया हैं। 'अंधायुग' के वस्तुपक्ष में मानव की अतृप्त इच्छाओं, मनोभावों, मानसिक संघर्ष का आधुनिक परिवेश में प्रस्तुतिकरण किया हैं। 'अंधायुग' में युद्ध जनित विध्वंसों का वर्णन करके मनुष्यों को उससे बचने की प्रेरणा दी है। युद्ध की विभीषिका तथा उसके कारणों पर प्रकाश डाला गया हैं। नाटककार भारती जी ने युद्ध जनित दृष्परिणामों को सफल एवं मर्मांतक शैली में प्रस्तुत करके आज के युद्ध लोलुप राष्ट्रों को उससे बचने की चेतावनी दी है 'अंधायुग' में मर्यादाहीन युग से संबंधित युद्ध की विभीषिका का यथार्थ चित्रण किया है। 'अंधायुग' में भारती जी ने कौरवों और पांडवों में से किसी का भी पक्ष न लेते हुए धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, आस्था अनास्था, पाप-पुण्य का तीव्र संघर्ष उत्पन्न किया हैं। अंधायुग ऐसा स्वातंत्र्योत्तर मिथकीय नाटक हैं जो समाज को बहुत कुछ सोचने और करने के लिए जागरूक करता है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि धर्मवीर भारती नयी कविता के उन प्रतिनिधि कवियों में हैं जिन्होंने नयी कविता को वस्तु और शिल्प के स्तर पर मानक ग्रंथ प्रदान किये। ठण्डा लोहा, सातगीत वर्ष कनुप्रिया, अंधायुग और सपना अभी भी जैसी रचनाओं का रचना विधान, भाषा-शिल्प अनूठा और अद्वितीय है। उनकी रचनाओं में विशेषण का प्रयोग चमत्कारिक ढंग से अनूठा है। उनका प्रयोग भाषा को गंभीर, अर्थवान, बिम्बात्मक, अर्थ व्यंजक, प्रभावोत्पादक, अर्थ प्रवण आदि कई गुणों से सज्जित करता है। उन्होंने नवीन और परंपरागत सभी प्रकार के विशेषणों का स्वाभाविक प्रयोग कर भाषा की अभिव्यंजना शक्ति में चार चाँद लगा दिये है। नयी कविता में भारती इस तरह के अकेल कवि है।

संदर्भ

1. अमर किरदारों को बुनने और अद्भुत लेखकों को गढ़ने वाला साहित्यकार संपादक
2. धर्मवीर भारती के उपन्यास 'गुनाहों का देवता' की समीक्षा
3. 'अन्धा युग' - धर्मवीर भारती, किताब महल प्रकाशन
4. हिंदी नाटक - डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, तीसरा संस्करण (२०१८) गिरीश
5. बीसवीं शताब्दी का हिंदी नाटक और रंगमंच रस्तोगी, भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण (२०१८)
6. हिंदी नाटक उद्भव और विकास - डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल प्रकाशन, संस्करण (२००८)

7. हेलैंड, जेनिस, (2013), नॉवेल क्राफ्ट: विक्टोरियन डोमेस्टिक हैंडीक्राफ्ट एंड नाइनटीन्थ-सेंचुरी फिक्शन तालिया शेफ़र द्वारा (समीक्षा)